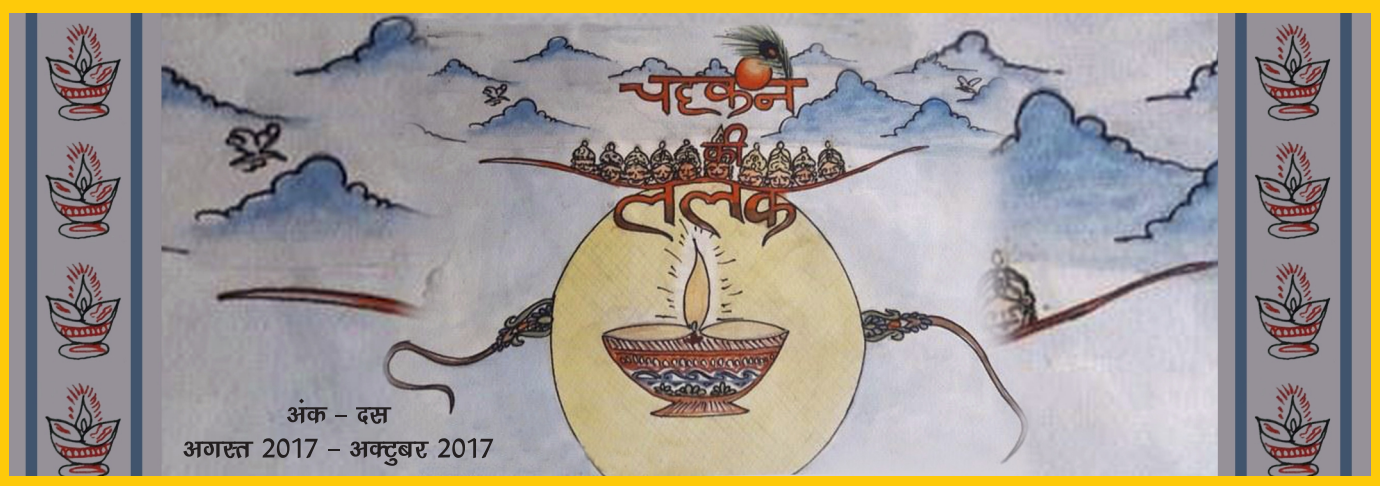

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

इस बार चहकने की ललक अंक.10 में मेरे बाल लेखकों ने मेरे लिए मेरे बारे में बहुत अछा लिखा है इससे पता चलता है कि

मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में काफी बदलाव हुआ है और मैं आशा करता हूं कि ये भी ऐसा ही अछा लिखेंगे। ये परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमें बच्चे अपनी-अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं।

आपका साथी मैं
(चहकने की ललक)

जन्म अष्टमी

जन्म अष्टमी का त्यौहार बहुत ही अच्छा लगता है। इस दिन हमलोग भगवान कृष्ण का जन्म दिन मनाते हैं। इस अवसर पर जन्म अष्टमी मनाया जाता है। सभी लोग उपवास रखते हैं और भगवान कृष्ण के मंदिर में जाकर पूजा करते हैं और प्रसाद चढ़ाते हैं। चारों तरफ भगवान का भजन कीर्तन होता है तथा सभी लोग 12 बजे रात तक जागते है और जब भगवान का जन्म होता है तो चारों तरफ सोर हो जाता है इस दिन हम लोग काफी खुश रहते हैं।

नाम-सलोनी कुमारी, वर्ग-6, नरेन्द्रपुर

अपनी बात

दुर्गापूजा जब आता है। तो छोटे बच्चे खुश हो जाते हैं। हमारे गाँव के सभी छोटे–बड़े पोखरे से मिट्टी लाते हैं। और दुर्गा जी को बनाते हैं। सारे बड़े भइया ..... से दुर्गा जी के लिए हजार की समाने लाते हैं और सजाते है। सतमी को आंख खुलता है। सब लोग प्रेम से आरती गाते हैं। दशमी को खुब जुलुस के साथ दुर्गा जी को भसाया जाता है। और दिन में मेला लगता है। तो मेला में मिठाई चाट और समोसा छोला खाते हैं और शाम को घर आते हैं।

नीरज शर्मा (बाल पथिक, परिवर्तन)
वर्ग 8 वां, ग्राम गजियापुर,

आप बीती

एक बार की बात है, मैं कृष्ण जन्म अष्टमी भुखी थी, उस समय मैं बहुत छोटी थी, मेरी सहेली भी कृष्ण जन्म अष्टमी भूखी थी, उस दिन मेरी तबियत खराब हो गई और मैं अपना उपवास तोड़ कर खाना खा

ली, मेरी मां मुझे डांटने लगी, तुम अब कभी उपवास मत रहना तुम्हारा तबियत खराब हो जाता है। इसलिए मैं उपवास नहीं करती हूं। मैं किसी भी व्रत के दिन भगवान को पुजा करके और भोजन कर लेती हूं।

ज्योति कुमारी, वर्ग 10 वां,
ग्राम बंथू सलोना

खुले से प्रश्न

हम जब किसी माचिस की तीली को माचिस की डिब्बी पर रगड़ते हैं तो क्या होता है? 'आग पैदा होती है।' असल में यह घटना इतनी सामान्य है कि हम इसके बारे में कभी सोचते ही नहीं है। हमें यह सोचने लायक ही नहीं लगती हैं लेकिन क्यों न आज हम इसी पर सोचें?

नाम–रॉबर्ट कुमार, कक्षा–10, खेमभटकन

कविता

जब मन में हो मौज बहारो की
चमकाएँ चमक सितारों की
जब खुशियों के शुभ घेरे हों
तन्हाई में भी मेले हो।
आनन्द की आभा होती है
उस रोज दिवाली होती है।
जब प्रेम के दीपक जलते हो,
सपने जब सच में बदलते हो,
मन में हो मधुरता भावों की,
जब लहके फसले चावों की
उत्साह की आभा होती है
उस रोज दिवाली होती है।
जब प्रेम से मीत बुलाते हो
दुश्मन भी गले लगाते हो,
जब कही किसी से वैर न हो
सब अपने हो कोई गैर न हो
अपनत्व की आभा होती है
उस रोज दिवाली होती है।

मधु कुमारी, वर्ग 6 वां, ग्राम नारायणपुर

हमारे बापु

कविता

एक हमारे बापु थे।
और एक उनकी लाठी,
सन 1857 में तोड़ा, अंग्रेजो की बाती।

काम था उनका बहुत निराला,
सत्य अहिंसा का रखवाला

बच्चों से करते थे प्यार
उनका था यह नेक विचार

रौशन किया देश का नाम
गांधी जी हो गये महान

मिंशु कुमारी, वर्ग 6 वां
ग्राम-कन्हौली

कहानी

एक छोटा सा गांव था, जिसमें महेश नाम का एक लड़का रहता था, एक दिन की बात है, जब दिवाली आई तो सबके घर में सफाई हो रहा था, महेश सुबह में जल्दी उठा और अपने घर का साफ–सफाई किया उसके बाद स्कूल पढ़ने गया, स्कूल में भी साफ–सफाई हो रही थी, महेश और उसके दोस्तों ने मिलकर अपने क्लास रूम एवं स्कूलो के बाहरी खेल मैदान को साफ–सफाई किया और कचड़ा को स्कूल के कुछ दूरी पे तलाब था, उसी में ले जाकर फेंक दिया।

संजना कुमारी, वर्ग 5 वां, ग्राम सीकियाँ

कहानी

एक लड़का था वह बगीचा में खेल रहा था उसी बीच उसका दोस्त श्याम आया उसने कहां कि तुम्हारा साईकिल मैं लेकर चलाऊ तो उसने कहां ठीक है, वह श्याम साईकिल चलाने लगा तो बगीचा में बहुत सारा गाय, भैस लोग पेड़ में बांधे हुवे थे, तो लड़का साईकिल चलाते–चलाते जाकर गाय में धक्का मार दिया और वह गिर गया और वह रोने लगा। फिर कुछ लोग आये और उसको उठाकर बैठाये तब से वो साईकिल चलाने से डरता है।

राजू कुमार, वर्ग 8 वां
ग्राम खरगी रामपुर

लेख

रक्षा बंधन भाई–बहन का एक त्योहार है। उस दिन बहन भाई बहुत खुश रहते हैं, बहन अपने भाई को राखी बांधती है, तिलक करती है, मिठाई खिलाती है, उसके बाद भाई का पैर छुकर प्रणाम करती है, आरती करती है, भाई अपने बहन को गिफ्ट या पैसा देता है।

मुकुल कुमार पडित, वर्ग 10 वा, भीखपुर

चुटकुला

एक दिन की बात है, तीन चींटी आपस में बात कर रही थी, उजली चींटी ने लाल चींटी से कहां तुम लाल क्यूं हो, तो लाल चींटी ने कहां मैं इंट पर रहती हूं इसलिए लाल हूं।

लाल चींटी : (काली चींटी से) तुम काली क्यों हो, काली चींटी बोली मैं पृथ्वी पर रहती हूं इसलिए काली हूं।

काली चींटी (उजली चींटी से) तुम उजली क्यों हो तो उजली चींटी बोली मैं फेयर लवली लगाती हूं इसलिए उजली हूं।

वंदना कुमारी, वर्ग 8 वां, ग्राम मदेशिलापुर

पति– अपने पत्नी से पहले महिने दिये पैसो का हिसाब माँग रहा था
पत्नी– कैसा पैसा वो तो सारा खर्च हो गया। तुम कमाते ही कितना हो।
पति– हे भगवान ये तुने क्या किया बंदर के गले में लंगुर क्यों बांध दिया।

रानी कुमारी, वर्ग 5 वां, ग्राम संथू

मेरा घर

छोटा सा है, प्यारा सा है,
सुन्दर सा है, न्यारा सा है,
लेकिन फुस का है बना, मेरा घर

ना छत है, ना सीढ़ियां है।
ना खिड़की है ना कड़ियां है।
ना जाने कहां से हवा दे जाता है, मेरा घर

शिक्षको की कलम से

वही पुरानी मिट्टी और मिट्टी के चुल्हे
वही पुरानी सिकहर है जिसपे खाना झूले
यह है दादा जी के छतरी और दादी का है यह खाट
मां मेरी करती है आंगन का रख रखाव
मुझे अपनो का याद दिलाता है, मेरा घर

सदियों यह पुराना है,
गुजरा कई जमाना है।
इसमें नया खजाना है।
एक संग्राहालय सा है, मेरा घर

प्रियंका कुमारी, किशलय फैसिलीटेटर, परिवर्तन

आने वाला थीम

अंक 11 के लिए

गुरूनानक जयंती | क्रिसमसडे नयासाल | गुरू गोविन्द जयंति | मकर संक्रांति | गणतंत्र दिवस | गुरू रविदास जयंति

आँख व रोशनी

अपने एक दोस्त की आँखों को देखो और ध्यान दो कि उसकी आँख की पुतली कितनी बड़ी है, अब उसके आँख पर टार्च से रोशनी डालो। क्या आँख की पुतली पर कुछ फर्क पड़ा?

करने को कुछ

साहेब हुसैन, कक्षा–6, भवराजपुर

पुस्तकालय

मैं पुस्तकालय को ज्ञान का घर कहते हुए सुना था पर अब देखने के बाद मुझे पता चला की सच में लोग पुस्तकालय को ज्ञान का घर कहते है, इसमें किताबों के बीच रहना मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे यहां से जाने का मन ही नहीं कर रहा था जी कर रहा था कि रात–दिन इसी में बैठकर किताब पढ़ता रहूं। इसी कारण मैं प्रतिदिन पुस्तकालय आता हूं। और रोज एक नया किताब पढ़ता हूं और एक नई जानकारी प्राप्त करता हूं।

अपनी बात

शम्भू कुमार, वर्ग 8 वां, ग्राम छितनपुर

हमारे बाल चित्रकार

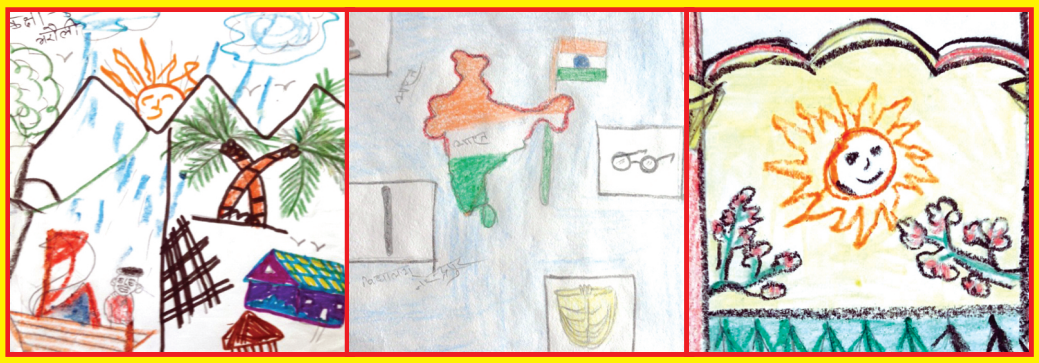

क्राॅफ्ट

पेपर क्राफ्ट में मुझे पेपर से बनाना बहुत ही अच्छा लगता है जब मैं क्राफ्ट में बनाना सीखी तो मेरी रूची सबसे ज्यादा इसमें लगी। इस गतिविधि को मैं काफी मन से सीखती हूं। और यह चाहती हूं कि आगे चलकर क्राफ्ट से पढ़ाई करूं और बहुत बड़ा क्राफ्ट का दुकान करूं और बहुत सारा पैसा कमाऊं।

रितिका कुमारी, वर्ग 5 वां, भवराजपुर

हमार बोली

जीउतिया एक व्रत ह, सब औरत लोग जीउतिया व्रत भुखेला लोग साझी बेरा सब औरत नदी में नहाये जाला, अउरी सब लोग नहा के एक जगह पर बैइठ के जीउत महाराज के कथा सुनेला, सबसे बुर्जुग औरत होली उहे कथा कहेली, बाकी औरत लोग कथा के सुनेला कथा जब खत्म हो जाता तब जीउतिया माला के पहिन लेला लो और अपना अपना घरे सभे लोग जाला। एक–दूसरे के प्रणाम करेला लोग और आशीर्वाद पावेला लोग।

पलक कुमारी, वर्ग 5 वां, ग्राम धरमपुर

पहेली

इन संख्याओं के बारे में मन ही मन जोड़ो सबसे पहले 1000 में 40 जोड़ो।
फिर 1000 जोड़ो। और अब 30 जोड़ो और फिर 1000 जोड़ो और अंत में 10 जोड़ो?

एक लड़की रात के वक्त एक अंधेरे कमरे में बैठी है।
वहाँ बिल्कुल भी रौशनी नही है। ना वहाँ लैम्प है, ना ही मोमबती फिर भी वो पढ़ रही है। क्या तुम बता सकते हो कैसे?

रोहित कुमार,
वर्ग 7 वां, ग्राम संजलपुर

चार ड्राइवर एक सवारी
उसके पीछे दुनिया सारी

बिना बुलाए डॉक्टर आया
सुई देकर चला गया।

ब्यूटी कुमारी
वर्ग–8
ग्राम–संथु

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स